सं० म्रो.वि./फरीदाबाद/20-84/9896 - वृंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै. एस. जी. स्टील प्रा. लि. . प्रताट तं. 6, तैस्टर 4, इण्डस्ट्रीयन कर हार्क्जिय इस्टेट, वस्तवगढ़ (करीदाबाद) के श्रमिक श्री कृष्ण नायस्थतया उसके प्रवृक्षकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीथोगिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वाछनीय स्मसते है;

इसलिए, ग्रव, श्रीक्षोगिक विवाद श्रिविनयम, 1947 की धारा 10 की उरधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शाक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा द्वेंजिक्त श्रिविनयम की धारा 7 (क) के श्रधीन श्रीक्षोगिक श्रिविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे हुंसुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक ज्या प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट कृंकरते हैं :—

क्या श्री कृष्ण नायर की सेवाझों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहुत का हकदार है ?

दिनांक 2 मार्चे, 1984

सं. म्रो.वि./एक.डी./13-84/9118.—-चूंकि हरियाणा के राज्यशाल की राय है। कि मैं. नरूला इन्टरप्राईजिज, गरुकुल क्रन्नगपुर रोड़, करीदाबाद, के श्रमित श्री मुख लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई सीबोगिक विवाद है;

भीर चुनि हरियाणा के राज्यशाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, ग्रीवागित विवाद ग्रविनियम, 1947 की भारा 10 की उपवारा (1) के बण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का ग्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी श्रविस्वना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रविस्वना सं. 11495-श्री-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त श्रविनियम की बारा 7 के भ्रवीन गिरुत श्रव क्यायालय, शरीदाबाद, को विवादग्रस्त पा उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा हुमामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, को कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रविस के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या बिजाद से मुसंगत ग्रवता संबंधित मामला है :--

क्या श्री मुख लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.मो.वि./एफ.डो./1/16-84/9125.—-चूंकि हरियाणा के राज्याल को राम है कि मै० नवीन को रेटिव हाऊस विल्डिंग सीसायटी लि॰, ग्राग्वानपुर, तिलयत, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री खेमी तथा उसके प्रवृत्यकों के मध्य इसने इसके बाद लिखित मामने में कोई श्रीद्योगिक विवाद हैं;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यशाल विवाद को न्यायिवर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है हैंया विवाद से सुसंगत सुखवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री खेमी की सेदाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. मो.बि./एक.डी./10-34/9132. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ॰ जनपल मैन्युफेक्चिंपग एण्ड कम्पनी, 13/3, मयुरा रोड़, फरोदाबाद के श्रमिक श्री राम सागर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक हैं बिवाद है;

भीर पूर्क हरियाणा के राज्यशाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भन, भौबोगिक विनाद भविनियन, 1947 की श्रारा 10 की उपशारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई संवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनोकः 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिक्षित्यम की धारा 7 के ग्रधीन गठिन श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुनंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम सागर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./11-84/9139.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० फरीदाबाद सैण्ट्रल कोपरेटिव बैंक लि०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रण सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मन, मोद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यावनिणय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथम संबंधित मामला है :—

क्या श्री रण सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. घो.वि./एफ डी./12-84/9146.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० प्रिक इण्डिया लि०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री भरत प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, झब, झौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 5415 -- 3 -श्र म -- 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हए अधिसूचना सं० 11495 - जी -श्रम - 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायलय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्धिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है: —

क्या श्री भरत प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 8 मार्च, 1984

सं भो. वि./फरीदाबाद/20-84/10081.---चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं एस. जी. स्टील प्रा० लि०, प्लाट न० 6, सैक्टर 4, इण्डस्ट्रीयल कम हार्ऊसिंग इस्टेट, बल्लबगढ़ (फरीदाबाद), के श्रमिक श्री कर्मजीत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रोबोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 ी श्रारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7(क) के श्रधीन श्रीबोगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तैया प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री कर्मजीत सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?